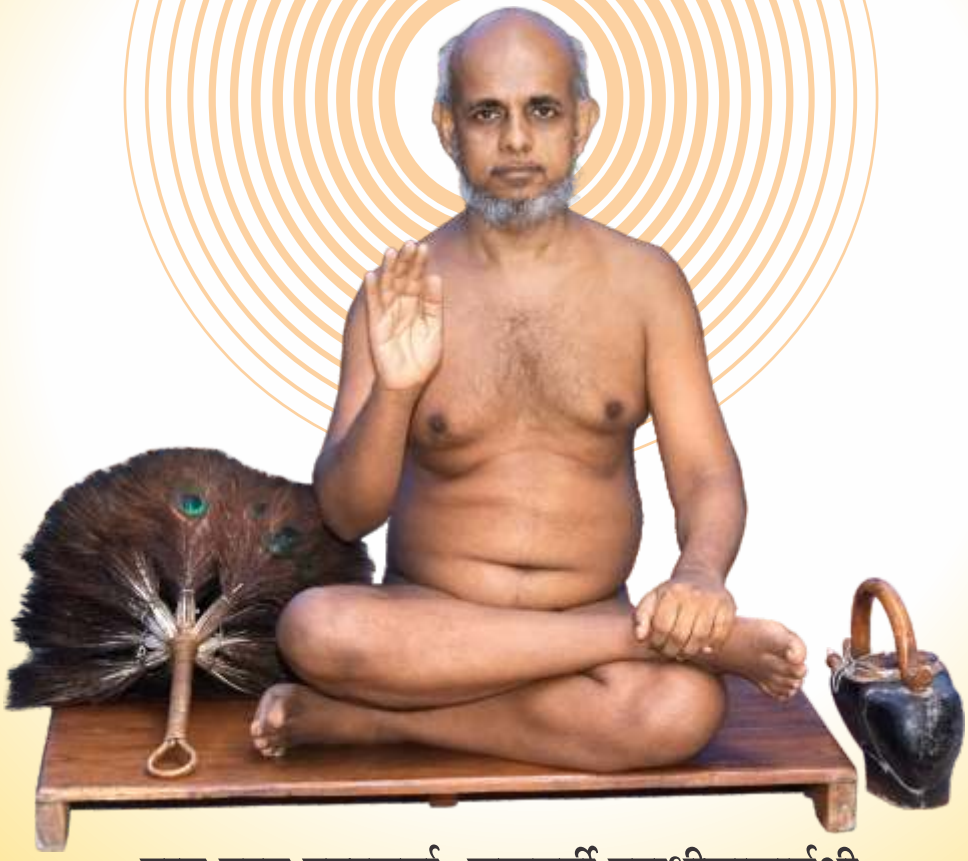

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद शान्तिविधान (लघु)

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

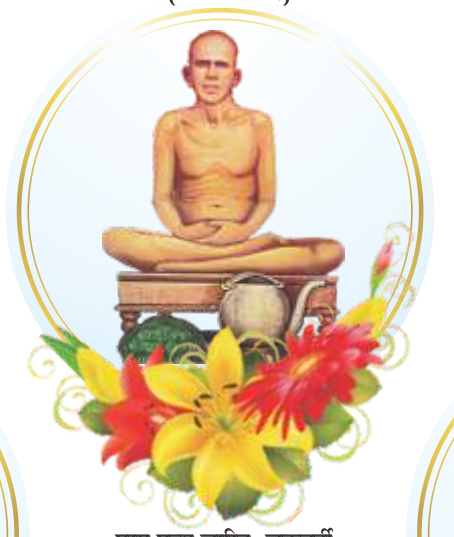

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
शांति विधान (लघु)

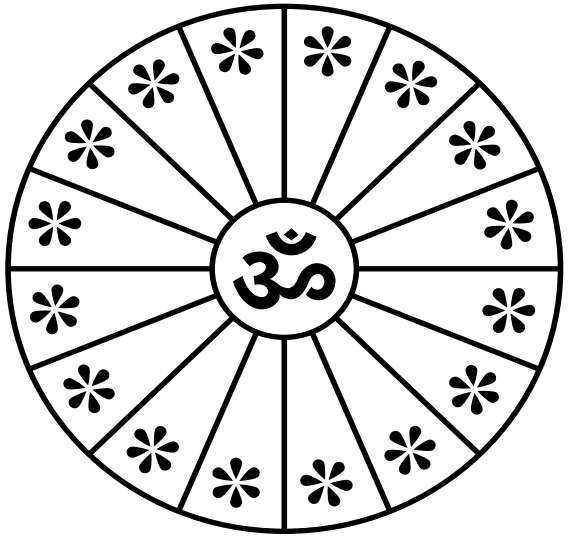

:: रचयिता ::
प. पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद शांति विधान (लघु)**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	तृतीय-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया जी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्रकाशक	:	साधु सेवा समिति हरिद्वार (उत्तराखण्ड) www.vishadsagar.com
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

:: अर्थ सौजन्य ::

श्रीमती अनिता जैन श्री सुरेन्द्र जैन ज्वालापुर, हरिद्वार

मुद्रक : **पारस प्रकाशन,** दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613

ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"शुद्धभावों से शान्ति प्रभु की भक्ति ही करेगी संकट का निवारण"

वर्तमान के सर्वाधिक 200 विधानों के रचयिता प.पू.आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज द्वारा रचित सभी विधानों को हम स्वयं भारत के विभिन्न जैन मंदिरों में 1008 बार से भी ज्यादा करवा चुके हैं सभी 200 विधान एक से बढ़कर एक हैं। समाज में जहाँ कहीं भी ये विधान करवाये गये वहाँ विशेष अतिशय चमत्कार देखने को मिला। लोगों के शारीरिक मानसिक दुखों का निवारण हुआ। अनेक भक्तों ने भावना प्रकट कि की आचार्य श्री आप एक ऐसी लघु पुस्तक भी तैय्यार करें-जिसमें लघु विनय पाठ से लेकर शांति विधान महाअर्घ शांतिपाठ विसर्जन एक ही पुस्तक में आ जाएं ताकि हम 16-108 या 1008 बार शांति विधान का लाभ अल्प समय में उठा सकें लोगों की भावनाओं के अनुरूप पुस्तक छपकर आपके हाथों में पहुँच रही है। नित्य प्रति पूजन के साथ यह विधान भी कर जीवन में अपार सफलता प्राप्त करें।

पुनश्च **आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज** के श्री चरणों में नमोस्तु एवं संघस्थ सपना दीदी जिन्होंने पुस्तक कम्पोज करने में सहयोग प्रदान किया पारस प्रकाशन के श्रीमान प्रमोद जी जिन्होंने अपनी प्रेस में यह पुस्तक छापकर आपके हाथों में पहुँचाई उन्हें शुभाशीष!

मुनि विशाल सागर (संघस्थ)
चान्दनी चौक दिल्ली

शान्ति स्तवन

नाना विचित्रं भव दु:ख राशि। नाना प्रकारं मोहं च पाशि।।
पापानि दोषानि हरंति देवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।1।।
संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता। मिथ्यात्व मध्ये कर्माणि बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।2।।
कामस्य क्रोधं माया विलोभं। चतु: कषाया इव जीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।3।।
जातस्य मरणं ध्रूतस्य वचनं। ध्रौ शांति जीव बहु जन्म दु:ख।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।4।।
चारित्र हीनं नर जन्म मध्ये। सम्यक्त्व रत्नं परिपालयन्ति।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।5।।
मृदु वाक्य हीनं कठिनस्य चिंता। पर जीव निंदा मनसा च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।6।।
पर द्रव्य चोरी पर दार सेवा। हिंसादि कांक्षा अनृत च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।7।।
पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधुर्। बहु जन्म मध्ये इहजीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवा:। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।8।।

(मालिनी छन्द)

जपति पठति नित्यं शांति नाथाद् विशुद्ध। स्तवन मधु गिरायां पाप संतापहारं।।
शिव सुख निधि पोतं सर्व सत्त्वानुकंपं। सुकृत सुगुण भद्रं भद्र कार्येषु नित्यं।।9।।

जप तप दाने पठते, नित्यं श्रीगुणभद्र स्वामि वाक्यं ते।
लभते नर स्वर्ग-सुखं, पुनरपि निर्वाण-पंथानं।।

।।इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

लघु विनय पाठ-1

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकनी, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥

ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥

भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- **पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।**
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोष अठारह से रहित प्रभु, छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन हैं, विशद साधु गुणवान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहे, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्यं विशेष॥4॥

ॐ ह्रीं विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान॥6॥

ॐ ह्रीं निर्वाण क्षेत्रभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।**
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥

विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

मूलनायक सहित समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्टगुणों की सिद्धि पाने, तव चरणों में आए हैं॥
णमोकार नन्दीश्वर मेरु, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष॥
देव-शास्त्र-गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमा कृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री..... सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिन चैत्यालय, रत्नत्रय-दशलक्षण-सोलहकारण-त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय कैलाश गिरि-सम्मेद शिखर- गिरनार-चम्पापुर-पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकर; विद्यमान बीस तीर्थंकर, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति विधान पूजा

स्थापना

दोहा- **पूजा करते आपकी, शांतिनाथ भगवान।**
हृदय पधारो आन के, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन् अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्-अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥वेसरी छन्द॥

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाते, जन्म जरादिक रोग नशाते।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म,जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पदवी पाने आए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पूजा में यह पुष्प चढ़ाएँ, काम रोग मेरा नाश जाए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मणिमय पावन दीप जलाएँ, मोह अंध मेरा नश जाए।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

परम सुगंधित धूप चढ़ाएँ, आठों कर्म नाश हो जाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

शुभ ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महाफल हम भी पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पावन हम पाएँ।
शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार॥

शान्तये शांति धारा.....

दोहा- **पुष्पांजलि करते विशद, पुष्प लिए शुभ हाथ।**
सुख शांती सौभाग्य हो, पूज रहे पद नाथ!॥

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा- **शांतिनाथ तव चरण में, वन्दन बारम्बार।**
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार॥

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

"अशोक वृक्ष" ।।चाल छन्द।।

जो शोक से रहित कहाए, वह तरु अशोक कहलाए।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥1॥
ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सुर पुष्प वृष्टी'

सुर पुष्प वृष्टि करवाते, मन में अति हर्ष मनाते।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥2॥
ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'दिव्य ध्वनि'

हो दिव्य ध्वनि शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥3॥
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'चँवर'

सुर जिन पद चँवर ढुरायें, जो जिन महिमा दर्शायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं चँवर सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सिंहासन'

हो रत्न जड़ित सिंहासन, जिस पर हो प्रभू का आसन।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'भामण्डल'

भामण्डल है शुभकारी, होता अति महिमाकारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'दुंदुभि'

दुंदुभि शुभ वाद्य बजायें, सुर नाचें हर्ष मनायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं दुंदुभि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'छत्रत्रय'

त्रय छत्र शीश पर सोहें, जन-जन के मन को मोहें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वसु प्रातिहार्य प्रगटायें, जो अतिशय शांति दिलायें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सिद्धों के आठ गुण'

'अनंत ज्ञान' ।।मोतियादाम छन्द।।

नशाए ज्ञानावरणी कर्म, प्रकट कीन्हें हैं आतम धर्म।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञानगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अनंत दर्शन'

दर्शनावरणी किए विनाश, दर्श प्रभु पावन किए प्रकाश।
देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं

निर्व. स्वाहा।

'अनंत सुख'

मोहनीय कर्म का किए विनाश, किए प्रभु सुख अनन्त में वास।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥11॥

ॐ ह्रीं अनन्त सुखगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अनंत शक्ति'

अन्तराय कर्म का किए हैं अंत, वीर्य प्रभु पाए आप अनन्त।
देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण॥12॥

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्यत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अव्याबाद्य'

वेदनीय का नाशे उन्माद, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥13॥

ॐ ह्रीं अव्यबाधत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अवगाहन'

सुगुण अवगाहन कीन्हें प्राप्त, कर्म आयू के नाशी आप्त।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥14॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अगुरुलघु'

अगुरुलघु गुण प्रगटाए देव!, कर्म प्रभु नाशे गोत्र स्वमेव।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥15॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सूक्ष्मत्व'

सुगुण सूक्ष्मत्व जगाए आप, कर्म प्रभु अपना नाशे नाम।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥16॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अष्ट गुण प्रगटाए जिनराज, पूजते जिनवर के पद आज।
देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुण प्राप्त शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **शांति नाथ भगवान का, जपें निरन्तर जाप।**
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

।।चौपाई।।

शान्ति नाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन-जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, हस्तिनागपुर धन्य बनाए।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।2।।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, सबने भारी हर्ष मनाया।।3।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवलज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।4।।
बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
हंसी खुशी में गम आ जाए, भय आकस्मिक उसे सतावे।।5।।
कारोबार मंद पड़ जावे, बार-बार घाटा लग जावे।
श्रम सारा निष्फल हो जावे, दुख पे दुख अति बढ़ता जावे।।6।।
रात दिवस ये चिन्ता लागे, प्रभु भक्ती में मन नहीं लागे।
प्रिय बन्धू बान्धव मुख मोड़ें, सुत दारा भी रिश्ता छोड़ें।।7।।

भूख प्यास निद्रा नहिं आवे, कैसे दुख की घड़ियां जावें।
पाप कर्म की लीला न्यारी, कभी रोग कभी हाहाकारी।।8।।
मस्तक पीड़ा सर्दी खाँसी, होता मति भ्रम सर्व विनाशी।
भक्ति प्रभु की शांति दिलाती, रोग शोक संकट मिटवाती।।9।।
यह विधान जो भक्त रचावें, ग्रह अनुकूल सभी हो जावें।
सुख सम्पत्त गुण यश के दानी, नव निधि चौदह रत्न प्रदानी।।10।।
दीन दरिद्री धन पा जाये, पुत्र हीन सुखकर सुत पाये।
अल्प बुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।।11।।
सर्व क्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता।
नाथ! निरंजन तारण हारे, हम सब के प्रभु आप सहारे।।12।।
मोक्ष महल जब तक ना पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!।।13।।
दोहा- नाथ! आपकी भक्ति से, भक्त बने भगवान।
अतः भाव से नित करें, भक्ती सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **श्रद्धा के शुभ पुष्प यह, अर्पित हैं भगवान।**
मुक्ती हो संसार से, पाना पद निर्वाण।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्य श्री का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय

धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।

श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

(शान्तये शान्तिधारा-3)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा

परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
जिन मंदिर में शोभते, जिनवर शांतीनाथ।
चालीसा गाते 'विशद', करते हम गुणगान॥

चौपाई

जम्बू द्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया॥1॥
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥2॥
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी॥3॥
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए॥4॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए॥5॥
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥6॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी॥7॥
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥8॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया॥9॥
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया॥10॥

पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।।11।।
पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।12।।
तीर्थंकर सोहलवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।।13।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।14।।
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।15।।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दु:ख मिटाया।।16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।।17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तपकल्याणक प्रभु का मानो।।22।।
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।26।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।।27।।

यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।28।।
योग निरोध किये जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।
नौ सौ मुनी श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।।31।।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।32।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।।33।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।34।।
श्री जिनवर को जो भी ध्याये, वह अपने सौभाग्य जगाये।।35।।
शान्तिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
भाव सहित जो दर्शन पाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।37।।
सुत के इच्छुक सुत उपजाते, निर्धन जीव सम्पदा पाते।।38।।
रोगी अपने रोग नशाते, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाते।।39।।
'विशद' भाव से महिमा गाएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ।।40।।

दोहा- **चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुनें जो लोग।**
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
शांतिनाथ के चरण को, ध्यायें जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावें वे निर्वाण।।

श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.....

शान्तिनाथ दरबार है, महिमा अपरम्पार है।
जिन मंदिर में शान्तिनाथ की, हो रही जय-जयकार है।टेक॥
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, हस्तिनागपुर जन्म लिए-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, को आकर प्रभु धन्य किए-2॥ शांन्ति...॥1॥

चालिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग शुभ पाएँ जी-2
एक लाख वर्षों की आयु, चिन्ह हिरण प्रगटाएँ जी-2॥ शांन्ति...॥2॥

कामदेव चक्री तीर्थंकर, हुए तीन पद धारी जी-2
जग वैभव सब छोड़ प्रभु जी, हुए आप अनगारी जी-2॥ शांन्ति...॥3॥

भादों वदी सप्तमी तिथि को, गर्भ कल्याण मनाए जी-2
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को सुर-नर, जन्मोत्सव में आए जी-2॥ शांन्ति...॥4॥

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, पावन संयम पाए जी।
पौष शुक्ल दशमी को प्रभु जी, केवलज्ञान जगाए जी।शान्ति..॥5॥

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को जिनवर, मोक्षमहाफल पाए जी।
कर्म नाशकर 'विशद' पूर्णतः, शिवपुर धाम बनाए जी॥ शांन्ति...॥6॥

कृति	:	**विशद शांति विधान (लघु)**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	चतुर्थ-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया जी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्रकाशक	:	साधु सेवा समिति हरिद्वार (उत्तराखण्ड) www.vishadsagar.com
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

:: अर्थ सौजन्य ::

श्री चिराग जैन, केशवदास जैन ज्वालापुर, हरिद्वार

मुद्रक : **पारस प्रकाशन,** दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com